भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष -2 /अंक -24/जून -2023

रथ यात्रा

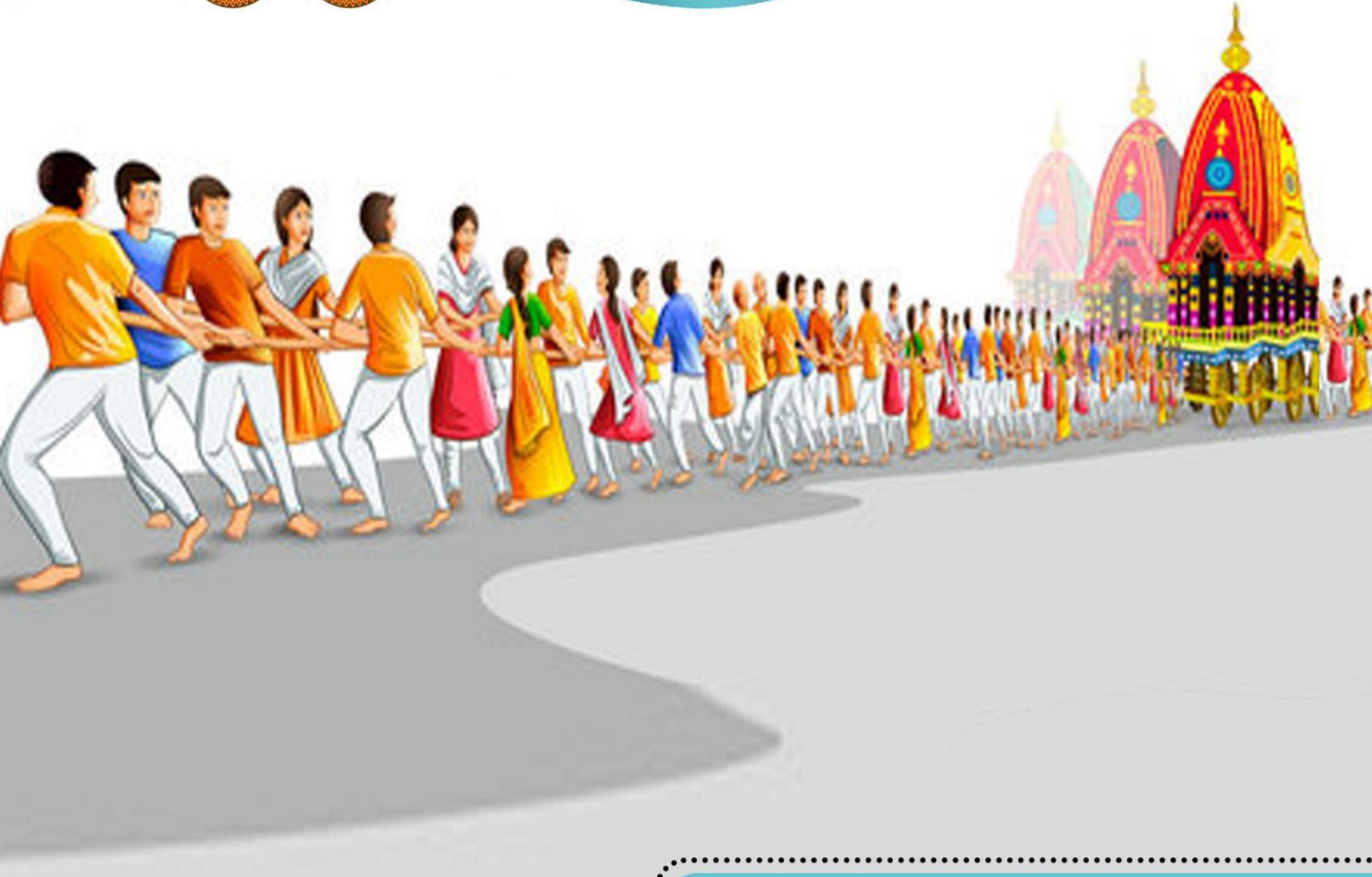

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष -2/अंक -24/जून -2023

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com
paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

माह जून २०२३

साका कैलेण्डर -1945 | विक्रम संवत -2080 | अयान - उतरायण | ऋतु - ग्रीष्म

सोम		05 आषाठ कृ, प्रतिपदा, विश्व पर्यावरण दिवस	12 आषाठ कृ, नवमी	19 आषाठ शु. प्रतिपदा,आषाढ गुप्त नवरात्रि प्रारंभ	26 आषाठ शु. अष्टमी,मासिक दुर्गाष्टमी
मंगल		06 आषाठ कृ, तृतीया	13 आषाठ कृ, दशमी	20 आषाठ शु. द्वितीया, प्रभु जगन्नाथ रथ यात्रा	27 आषाठ शु. नवमी, भढली नवमी, गुप्त नवरात्रि समाप्त
बुध		07 आषाठ कृ, चतुर्थी	14 आषाठ कृ, एकादशी, योगिनी एकादशी व्रत	21 आषाठ शु. तृतीया, साल का सबसे बडा दिन	28 आषाठ शु. दशमी
गुरू	01 ज्येष्ठ शु. द्वादशी	08आषाठ कृ, पंचमी	15 आषाठ कृ, द्वादशी	22 आषाठ शु. चतुर्थी, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस	29 आषाठ शु. एकादशी, देवशयनी एकादशी व्रत
शुक्र	02 ज्येष्ठ शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	09 आषाठ कृ, षष्ठी	16 आषाठ कृ, त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	23 आषाठ शु. पंचमी	30 आषाठ शु. द्वादशी, वासुदेव द्वादशी
शनि	03 ज्येष्ठ शु. चतुर्दशी	10 आषाठ कृ, सप्तमी	17 आषाठ कृ, चतुर्दशी,मासिक शिवरात्री	24 आषाठ शु. षष्ठी, स्कन्द षष्ठी	
रवि	04 ज्येष्ठ शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, वट पूर्णिमा व्रत	11 आषाठ कृ, अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	18 आषाठ कृ, अमावस्या, पितृ दिवस	25 आषाठ शु. सप्तमी, भानू सप्तमी	

कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

वट सावित्री पूर्णिमा व्रत

हिंदू संस्कृति में अनेको तीज-त्योहार, परंपराएं है जो हमें प्रकृति से एवं निसर्ग से जोड़े रखती हैं। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इन को भगवान का दर्जा दिया गया है। जैसे **नागपंचमी (सांप की पूजा), पोळा (बैलों की पूजा), वसुबारस या बछ बारस (गाय-बछड़े की पूजा), तीज गुड़ी पाड़वा (नीम और आम के पत्तों का महत्व), दशहरा (शमी वृक्ष के पत्ते), वटपौर्णिमा (वड या बरगद के पेड़ की पूजा)।** बरगद, पीपल, कडुनीम इन जैसे और भी अनेकों वृक्षों को दीर्घायु मिला है।

ऐसे पेड़ों के महत्व और उनसे होने वाले फायदों को जन जन तक पहुंचाने के लिए भारतीय संस्कृति में इनकी पूजा करने का उल्लेख है। इन पवित्र और वरदान युक्त पेड़ों को तोड़ने का साहस भी कम हो जाता है। सभी पेड़ों में बरगद का पेड़ सबसे पवित्र और लंबी आयु वाला माना गया है। इसके अलावा उसकी शाखाओं की वजह से उसका विस्तार बहुत अधिक बढ़ जाता है ऐसे बड या बरगद के वृक्ष की पूजा करके उसी की तरह मेरा घर संसार भी फले-फुले, पति को आरोग्य, संपन्नता और लंबी आयु मिले, धन-धान्य, पोते-पोती इन सब से मेरे संसार का विस्तार हो ऐसी प्रार्थना हर महिला करती है।

इस पूजा के पीछे परंपरागत कथा है। भद्र देश में अश्वपति नाम का एक राजा था। बहुत पूजा, पाठ करके भगवान सावित्र के आशीर्वाद और वरदान से उनको एक सुंदर, सुशील, गुणवान कन्या हुई उसका नाम सावित्री रखा गया। सावित्री की शादी की उम्र होने पर योग्य वर न मिलने की वजह से सावित्री के पिता ने उसे ही अपना जीवन साथी खोजने के लिए कहा। सावित्री ने साल्व देश के राजा द्युमत्सेन के राजकुमार सत्यवान को चुना। द्युमत्सेन का राज्य शत्रुओं ने छीन लिया था इस वजह से वह अपनी रानी एवं बच्चों समेत तपोवन में रहने लगे थे। सत्यवान अल्पायु थे यह बात नारद मुनि जानते थे, इसलिए उन्होंने सावित्री को सत्यवान से विवाह न करने की सलाह दी। किंतु सावित्री नहीं मानी और सत्यवान से विवाह करके वह जंगल में ही अपने परिवार के साथ रहने लगी। एक बार सत्यवान लकड़िया तोड़ने जंगल में गए वहां मूर्छित होकर गिर पड़े। कहते हैं कि यमराज उनके प्राण ले जाने आए तभी सावित्री यमराज के पीछे पीछे जाने लगी। यमराज के बार-बार मना करने पर भी वह नहीं मानी। तब **यमराज ने उसको अपने पति को छोड़कर तीन वरदान मांगने को कहा। पहले वरदान में उसने अपने सास-ससुर के आंखों की रोशनी मांगी।**

दूसरे वरदान में उनका खोया हुआ राज्य मिलने की मांग की और तीसरे वरदान में खुद के लिए 100 पुत्रों की मांग की। यमराज के तथास्तु कहते ही वह वचनबद्ध हो गए और उनको सत्यवान के प्राण लौटाने पड़े। सावित्री के इस साहस और त्याग से प्रसन्न होकर यमराज ने उसे अखंड सौभाग्य का वरदान दिया। उस समय सावित्री सत्यवान को लेकर वट वृक्ष यानी बरगद के पेड़ के नीचे ही बैठी थी।

इसीलिए यह व्रत हर साल ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को और कुछ जगहो पर जयेष्ठ माह के पूर्णिमा को यह व्रत किया जाता है, जिसमें सभी महिलाएं वट वृक्ष की पूजा और व्रत करती है। **वट वृक्ष को वस्त्र, फल (आम), फूल चढ़ाती है और वृक्ष को सात बार सूती धागा लपेटती हैं। सात जन्मो तक यही साथी पति के रूप में मिले ऐसी कामना करती हैं। बाकी सुहागन महिलाओं की गेहूं एवं आम के फल से खोल भर्ती हैं और व्रत करती है। इस तरह आज भी यह परंपरा चली आ रही है।** जब हर सुहागन महिला अपने पति के दीर्घायु के लिए वट सावित्री का व्रत करती है।

"वटवृक्ष लावूनी दारोदारी, साजरी करावी वटपौर्णिमा,
हीच वृक्ष उतरतील, आयुष्यात आपला जीवन विमा।।"

इस तरह पत्नी का अपने पति के लिए प्रेम, समर्पण, परवाह और भरोसा नजर आता है और उसमें हर दिन वृद्धि होती है**। धन्य है वह हिंदू संस्कृति जिसकी वजह से इंसान को इंसान से जोड़ कर रखा है।** हिंदू त्योहारों ने ही हमें इंसान और इंसानियत के तौर पर अनुशासित किया है। इन सभी का हमारे जीवन में अत्याधिक महत्व है।

- योगिता सदानी जी, पुणे (महाराष्ट्र)

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

प्रकृति संरक्षण जीवन बीमा है

आप लोगों में से कितनों ने अपना जीवन बीमा या स्वास्थ्य बीमा करवाया है? और क्या गारंटी है कि वो आपके लिए हितकर होगा। यदि बीमा को भोगने से पहले धरती और पूरे जीव जगत का अस्तित्व समाप्त हो गया तो? मैं एक वाक्य में कहूंगा कि **"प्रकृति संरक्षण जीवन बीमा है"** ।

ईश्वर द्वारा रचित इस पावन सृष्टि में सभी जीव एवं तत्व अपने अपने अस्तित्व को अपने भीतर समेटे हुए हैं।

कोई भी प्राकृतिक रूप से अपने अधिकारों से वंचित ना हो प्रकृति का ध्येय है। **इस पावन धरा पर जो सबसे अमूल्य रत्न है वह है, पादप जगत या पेड़ पौधे जो की एकमात्र हमारी जीवन का स्रोत है।**

अगर तथ्यों को देखा जाए तो दक्षिण अमेरिका के 60 लाख वर्ग किलोमीटर में फैला अमेजन का वर्षा वन विश्व का लगभग 15% ऑक्सीजन का स्रोत है। लेकिन बढ़ती आधुनिकता और मानवता के हर ह्रास में प्रकृति निरंतर दोहन को झेल रही है।

अगर 1988 से अब तक देखा जाए तो वर्षा वन के औसतन 10000 एकड़ की वृक्षों की कटाई प्रतिदिन हो रही है, और यदि यूँ ही चलता रहा तो 2030 तक अमेजन के लगभग 27% वृक्ष समाप्त हो जाएंगे जो जीव जगत के लिए बहुत घातक होगा। अगर भारत की बात की जाए तो लगभग 7 लाख वर्ग किलोमीटर में फैले यहां के वन, भारतीय भूमि के 21 फ़ीसदी का आंकड़ा रखते हैं। पर इन सब तथ्यों को जानकर क्या होगा जब तक हम इसका उचित समाधान नहीं निकालेंगे।

भारतीय दशाओं को देखा जाए तो जो सबसे प्रभावित है वह है ग्रामीण क्षेत्र, आजकल निरंतर बढ़ते औद्योगीकरण वाले युग में ग्रामीण क्षेत्रों के वृक्षों की कटाई की जा रही है। उससे भी बड़ी दुखद विडंबना यह है कि, अवैध उत्खनन के चलते लोग अपने खेतों की मिट्टी बेच देते हैं जिससे पेड़ पौधों की हानि के साथ-साथ भूमि अपरदन की समस्या भी बढ़ती जा रही है।

अगर माननीय स्तर से सोचा जाए तो यह पावन धरा के साथ दुष्कर्म ही होगा यह हरकतें कहां तक जायज है? हम मनुष्य को इसलिए श्रेष्ठ बनाया गया जिससे प्रकृति के होने वाली अनुचित व्यवस्थाओं को हम सुधार सकें। पर हम तो पृथ्वी का शोषण करने में लगे हैं। किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए औद्योगीकरण जरूरी है। पर इसका यह अर्थ नहीं कि मानव जाति अति ही कर दे, **औद्योगीकरण के आड़ में ना जाने कितने ईंट भट्ठे बगैर उचित प्रावधानों के संचालित हो रहे हैं, जिसकी अहम भूमिका है पृथ्वी के दोहन में। ऐसे ईंट भट्टे बगैर प्रदूषण प्रबंधन की व्यवस्था के धरती की छाती पर बेखौफ होकर धधक रहे हैं, और रही अवैध खनन करवाकर मिट्टी का व्यापार करते हैं जो कि वृक्षों के भी हानि का कारण बनते हैं।**

प्रकृति संरक्षण जीवन बीमा है

अगर एक सत्य यथार्थ का उदाहरण देना हो तो मैं अपने ही गांव का उदाहरण देता हूं जिसके चारों तरफ चार-पांच ईट भट्ठे हैं, जिनके मुख से निरंतर मृत्यु वायु निकल रही है। और आए दिन गांव में उत्खनन जारी है, पेड़ कट रहे हैं। मैं वह व्यक्ति हूं जो अपनी आंखों के सामने स्वर्ग से हरी भरी भूमि और गांव को एक खंडहर व नरक बनते हुए देख रहा हूं। इन सबका कारण मेरे गांव के कई लोग हैं अगर वह अपनी मिट्टी ना बेचें तो कोई भी जबरदस्ती उनका खनन नहीं कर सकता।

परंतु इसे ही मानवता की क्षीणता कहते हैं। पर इन दुर्दशा पर किसी भी व्यक्ति की दृष्टि नहीं जा रही विकास के नाम पर हम इतनी भट्ठे बनाकर क्या ही करेंगे जब उसके लिए सही भूमि और जीव जगत ही नहीं रहेगा। यह एक गांव के लिए कितना अन्याय पूर्ण है कि उसके चारों ओर चार से पांच ईट भट्ठे हो और पूरी भूमि खंडहर हो चुकी हो। जिसके प्रदूषण से ना जाने कितनी बीमारियां फैल रही हैं और फसलों पर इसका दुष्प्रभाव पड़ रहा है।

अगर इन उद्योगों को स्थापित ही करना हो तो उन्हें निर्जन या कम जन वाले क्षेत्र में लगाया जाना चाहिए वह भी सीमित संख्या में। **जीव जगत के लिए जो सबसे पहली प्राथमिकता होनी चाहिए वह है प्रकृति का संरक्षण।** पर इन सब पर ना ही आम जनमानस की दृष्टि जाती है ना ही सरकार या शासन प्रशासन की और जाएगी भी क्यों उद्योग के मालिक तो बड़े-बड़े उद्योगपति हैं, जो चुनाव में राजनेताओं को पैसे देते हैं, अतः उनके खिलाफ बोलना देशद्रोह माना जाता है ।
पर ऐसा कब तक चलेगा? इस कटु सत्य को दबाना होगा।

मुझे नहीं लगता कि **कभी ऐसा नियम भी बनाया जायेगा कि पहले वृक्षारोपण करो फिर ईंट भट्ठे या किसी भी उद्योग का लाइसेंस मिलेगा। यदि ऐसा होता है तो यह पृथ्वी और प्रकृति के संरक्षण और हित में अहम कदम होगा।**

हर क्षेत्र में जहां जहां भी प्राकृतिक दोहन हो रहा है उसकी जिम्मेदार मानव जाति ही है। अंधाधुंध पेड़ों की कटाई से और बढ़ते प्रदूषण से वैश्विक उष्णता (Global Warming) में वृद्धि हो रही है जिसके कारण ओजोन का क्षरण भी हो रहा है और नकारात्मक तथा पराबैंगनी किरणें हमें कई रोगों जैसे चर्म रोग नेत्र रोग कैंसर इत्यादि से ग्रसित कर रहे हैं तो वहीं फसलों पर भी इसका दुष्प्रभाव देखा जा सकता है। बढ़ती ग्लोबल वार्मिंग के कारण बड़े-बड़े ग्लेशियरों के पिघलने से बाढ़ जैसी समस्याएं आती हैं जिनके कारण कई जान माल की हानि होती हैं, अंततः देखा जाए तो हम हम मनुष्य अपने ही कृत्यों का फल पाते हैं। पर ना जाने हमको कुपित मानव जाति कब समझेंगे अगर एक छोटे स्तर से भी शुरू किया जाए तो भी हम धरती को त्रास से बचा सकते हैं।

वृक्षारोपण ही एकमात्र समाधान है प्रकृति के संरक्षण का हम वृक्ष लगाने के लिए कई बहाने भी ढूंढ सकते हैं अपनी छोटी-छोटी खुशियों में यदि व्यक्ति एक वृक्ष ही लगा दे तो वह प्रकृति को बहुत बड़ा उपहार दे रहा होगा।

- दीपक चौरसिया जी, "ईशदीप", बस्ती (उत्तर प्रदेश)

WHITE BERRY
RESIDENCY

OC
Received

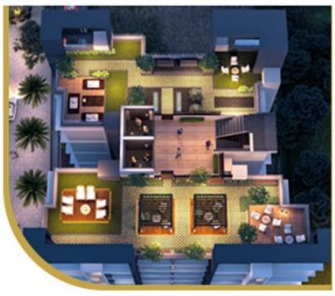

READY TO MOVE
1, 2 BHK & Jodi Flats

BOOK NOW

98705 80810, 85913 69996

www.whiteberryresidency.com
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.

www.kingswedsqueens.com

GAATHBANDHAN
Kings weds Queens

PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE

WEDDING
INVITATION

Call Us

+91 7303021123

145. अज्ञातवर्ष क्या था...? - कौरवों और पाण्डवों के बीच खेले गये जुए की एक शर्त यह थी कि हारने वाला पक्ष बारह वर्ष तक वन में रहेगा । तेरहवा वर्ष अज्ञातवर्ष होगा अर्थात उस वर्ष उन्हें छुपकर रहना होगा; यदि अज्ञातवर्ष के दौरान उनकी पहचान उजागर हो गयी तो पुन: बारह वर्षों के लिये वनवास में रहना होगा।

146. पाण्डवों ने अपना अज्ञातवर्ष कहा बिताया...? - विराटनगर में ।

147. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये धर्मराज ने कौनसा वेश धरा...? - धर्मराज ने **"कंक" नामक ब्राह्मण** का वेश धरा। जिसका काम था राजा, मन्त्री तथा राजा के सम्बंधियों को पासा खेलकर प्रसन्न रखना।

148. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये भीमसेन ने कौनसा वेश धरा...? - भीमसेन रसोई बनाने में प्रवीण थे अत: वे **"बल्लव" नामक रसोइया** बनकर राजा के दरबार में उपस्थित हुए।

149. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये अर्जुन ने कौनसा वेश धरा...? - अपने को नपुंसक घोषित करते हुए, हाथों में चूडियां पहनकर व सिर पर चोटी गूंथ कर **"बृहन्नला"** नाम से अन्त:पुर की स्त्रियों को संगीत व नृत्यकला की शिक्षा देने लगे। ज्ञात रहे कि स्वर्ग प्रवास के दौरान अप्सरा, उर्वशी द्वारा दिया गया नपुंसक बनने का श्राप, अज्ञातवास के दौरान वरदान बन गया।

150. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये नकुल ने कौनसा वेश धरा...? - नकुल को अश्वविद्या की विशेष जानकारी होने से वह घोड़ों को चाल सिखलाने, उनकी रक्षा करने, पालन करने व चिकित्सा करने में विशेषज्ञ थे। नकुल ने **"ग्रन्थिक"** नाम से अश्वपाल का कार्य किया।

151. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये सहदेव ने कौनसा वेश धरा...? - चूंकि सहदेव गोपालन की विद्या में कुशल थे अत: उन्होंने गोपालक के रूप में **"तन्तिपाल"** नाम से कार्य किया।

152. अज्ञातवर्ष के दौरान अपनी पहचान छुपाने के लिये द्रौपदी ने कौनसा वेश धरा...? - द्रौपदी की पूर्व दासी के रूप में परिचय देते हुए, विराट नगर की महारानी सुदेष्णा की केश श्रृंगार करने वाली दासी **"सैरन्ध्री"** के रूप में अज्ञातवर्ष बिताया।

153. कीचक कौन था...?
- विराट नगर की महारानी सुदेष्णा का भाई। दासी के रूप में द्रौपदी को देखकर वह उस पर आसक्त हो गया था।

154. कीचक का वध किसने किया...? - कीचक महाराज का साला होने के साथ-साथ विराट नगर का सेनापति भी था। उसकी शक्ति के समक्ष महाराज विराट बेबस थे। पाण्डवों की योजनानुसार द्रौपदी ने कीचक को रात्रि में नृत्यशाला में बुलाया जहां पर पहले से छिपे भीमसेन ने कीचक का वद्य किया।

155. विराटनगर से गोधन किसने चुराया..? - त्रिगत देश के राजा सुशर्मा ने विराट नगर पर हमला कर उनकी एक लाख गायें हर ली थी।

156. सुशर्मा को किसने हराया...? - सुशर्मा बलशाली यौद्धा था उसके सैनिक बल के सामने विराटनगर की सेनाएं जब हारने लगी तो भीमसेन के नेतृत्व में चारों पाण्डवों ने उसे परास्त किया।

157. कौरवों ने विराटनगर पर चढ़ाई कब की...? - जब विराटसेना त्रिगतराजा सुशर्मा से युद्ध कर रही थी उस समय कौरवों ने विराटनगर पर चढ़ाई की और उनके विशाल गोधन को हांक लिया।

158. कौरव सेना का सामना किसने किया...? - महाराज विराट की अनुपस्थिति में राजकुमार उत्तर कौरव सेना का सामना करने गया। द्रौपदी की सलाह पर उसने बृहन्नला अर्थात अर्जुन को अपना सारथी बनाया।

159. राजकुमार उत्तर ने कौरव सेना पर विजय कैसे पायी...? - युद्धभूमि में कौरव सेना के भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदि महारथियों को देख राजकुमार उत्तर घबरा गया और भागने लगा। ऐसे में बृहन्नला के रूप में सारथी बने अर्जुन ने युद्ध की कमान अपने हाथ में ली और अपने रणकौशल से कौरव सेना को परास्त किया।

160. कौरवों की पराजय के बाद राजकुमार उत्तर ने क्या किया...? - अर्जुन ने अपने पराक्रम से समस्त यौद्धओं को पराजित कर सम्मोहन शस्त्र से उन सबको बेहोश कर दिया। तत्पचात अर्जुन की आज्ञा से राजकुमार उत्तर ने सभी वीर यौद्धाओं के वस्त्र (सम्भवत: पुरूषों द्वारा लगाया जाने वाला दुपट्टा) उतार लिये।

161. महाराज विराट ने अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह किसके साथ किया...?
- राजकुमार उत्तर के साथ-साथ महाराज विराट के एक और सन्तान, पुत्री उत्तरा थी। पाण्डवों के प्रकट हो जाने के पश्चात उत्तरा का विवाह अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु के साथ किया गया। ज्ञातव्य रहे कि महाभारत युद्ध के पश्चात समस्त कौरवों और पाण्डवों के वंशजों में उत्तरा के गर्भ में पल रहा शिशु ही अन्तिम वंशज के रूप में बचा। यह शिशु कालान्तर में **"परीक्षित"** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

(अभिमन्यु-उत्तरा के विवाह के साथ ही महाभारत के चौथे और सबसे छोटे पर्व, विराट पर्व का समापन हुआ। अगला पर्व उद्योग पर्व है)

(क्रमश:....., अगले माह)
- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

भारतीय परम्परा की मासिक ई-पत्रिका नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

कविता - जीवन का सफर

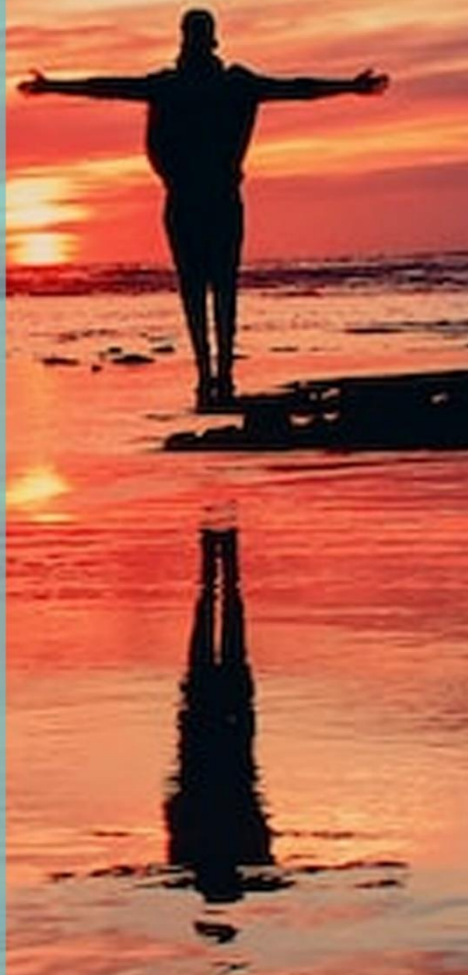

जीवन 'चलती-फिरती छायां'
'जीवन का मर्म' कोई जान नहीं पाया
जीवन है 'कर्मों का फल'
'कर्म-भाग्य' से होता जीवन सफल।

मनुष्य है मुसाफिर, जीवन है एक सफर
सुख-दुख, उतार-चढ़ाव भरा है जीवन का सफर
सफलता-असफलता, पाना- खोना, बचपन, बुढ़ापा
और जवानी
हर राही की राह अलग है, और सबकी अपनी-अपनी
अलग कहानी।

भोर सुहानी, शाम सुहानी और रहस्य भरी जीवन की
डगर
सोच-समझ कर कदम बढ़ाना, बड़ा विचित्र है जीवन
का सफर
ईश्वर हमें सद्बुद्धि दो और बनाओ सच्चा इंसान!
सुख-शांति, संयम और संतोष का हमें दो वरदान!!

- भजनलाल हंस बघेल जी, पलवल (हरियाणा)

जल उत्सव

जल की एक - एक बूंद बचाएं।
जल का उत्सव आज मनाएं।

जल ही सबका जीवन है।
जल ही सबकी खुशियां।
जल बिना यह लगती है
सूनी - सूनी सारी दुनिया।

छाए धरा पर फिर हरियाली
पग - पग पर हम पेड़ लगाएं।

कोई प्राणी हो न प्यासा।
कंठ सभी के तर हो।
पनिहारिन के माथे पर
फिर पानी की गागर हो।

राधा को अब बंसी - स्वर में -
पनघट पर फिर कृष्ण बुलाएं।

नदी, ताल, ये कुएं बावड़ी।
जल के पावन - तीर्थ बनें।
अमरित की बस बारिश हो ;
नभ में छाएं मेघ घने।

मयूरा मन के कान्हा - वन में -
नाचे, हर दिन पंख फैलाए।

- अशोक आनन जी, मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

खाली वक्त

आज कुछ खाली वक्त था
खुद से रूबरू होने का भी यही वक्त था।
मुद्दतों बाद आज अपना चेहरा शीशे में
ध्यान से देखा था।

चेहरा देखकर समझने में देर न लगी कि
चेहरा तो वही था
पर अंदर ही अंदर बहुत कुछ बदला था
आज कुछ खाली वक्त था।

शीशा आंखों ही आंखों में आज मुझसे पूछ
रहा था
अब तक तेरे पास क्यों वक्त न था?

मैं मुस्कुराई और बोली ऐ शीशे एक दिन
तो ऐसा बता जब मेरे पास तेरे लिए वक्त न
था।
शीशा भी मुस्कुराते हुए बोला बस तेरे पास
खुद से रूबरू होने का ही वक्त न था।

आज कुछ खाली वक्त था।
मैंने नि:शब्द से खड़ी शीशे को निहारती
रही
और प्रश्न आज खुद से ही पूछती रही
क्या मेरे पास मेरे लिए ही वक्त ना था?

आज कुछ खाली वक्त था।

- ज्योत्स्ना नाज़वानी जी, इंदौर (म. प्र.)

वैदिक काल प्राचीन भारतीय संस्कृति का एक कालखंड या एक निश्चित समय काल है। वैदिक काल में ही हमारे वेदों की रचना की गई। **वेदों का आधारभूत ढाँचा होने के कारण इसे वैदिक काल कहा गया। वैदिक सभ्यता ही हिंदू सभ्यता है।** वैदिक काल की सभ्यता को आर्य काल की सभ्यता भी कहा गया, आर्य काल की सभ्यता के बारे में वैदिक साहित्य से जानकारी प्राप्त होती है। हिंदू धर्म के जो चार वेद माने गए हैं उनमें सबसे अधिक प्राचीन ऋग्वेद है, तथा अधिक महत्वपूर्ण है।

वैदिक काल स्त्रियों की स्थिति का स्वर्ण काल माना जाता है, स्त्रियाँ प्रतिभा शाली तथा वेदों की ज्ञाता थी। प्रतिभाशाली होने के बावजूद भी उनकी प्रतिभा को कुंठित करने के प्रयास किए गए, वैदिक काल अधिक प्रगतिशील था, हर वर्ग की महिला को पर्याप्त स्वतंत्रता मिली यही कारण है कि वैदिक काल की नारी वर्तमान काल की नारी की आदर्श बनी है।

वैदिक काल आदर्श काल क्यों ?

वैदिक काल में बेटे और बेटी सामाजिक और धार्मिक अधिकारों में बहुत अंतर नहीं था। वैदिक काल की जो विदुषी महिलाएं हैं उनमें से 20 महिलाओं ने धार्मिक भजनों की रचना की। ब्रह्मवादिनी ममता लंबे समय तक जीवित रहने वाले संत की माँ थी, अत्रि महर्षि के वंश में पैदा हुई विश्वबारा ने ऋग्वेद के पाँचवें मंडल के 28 बे सूत्र में वर्णित 6 संस्कारों की रचना की। ब्रह्मवादिनी अपाला ने ऋग्वेद की 808 मंडलियों के 91 सूत्र के 1 से लेकर 7 तक श्लोकों का संकलन किया, ब्रह्मवादिनी घोष एक प्रख्यात विद्वान थी उन्होंने ब्रह्मचारी कन्या के सभी कर्तव्यों का उल्लेख किया।

ब्रह्मवादिनी सूर्या ने ऋग्वेद की विवाह पद्य की रचना की है, ब्रह्मवादिनी वक्र ने जो राजदूत ऋषि की बेटी थी वह ब्रह्मज्ञानी थी और भगवती देवी से एकात्मता प्राप्त की। पुरुषों और महिलाओं के बीच तर्क संवाद को प्रगतिशील समाज की निशानी माना जाता, इन महिलाओं की विद्वता उनकी बहस में दिखती है वह विवाहित अविवाहित दोनों महिलाओं द्वारा की जाती थी। मैत्री ऋषि यज्ञोपवीत की पत्नी जो आत्म विद्वानथी, मैत्री का दार्शनिक संवाद मानव जीवन की दशा और भौतिक जीवन की सीमाओं पर प्रश्न सुंदर तथा गहरे हैं।

महिलाओं की स्थिति –

बेटे की तरह बेटी के भी उपनयन संस्कार होते थे, जिन्हें शिक्षा की शुरुआत माना जाता लड़के-लड़कियाँ ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते, लड़कियों के लिए कोई अलग गुरुकुल नहीं थे फिर महिला शिक्षा प्रचलित थी।

माता-पिता की इच्छा से बेटियाँ पुजारी भी बन सकती थी, ऋग्वेद में लोपामुद्रा, घोष सिकता निंबारी विश्ववारा का उल्लेख है।

ऋग्वेद के पहले मंडल के 126 वे सूत्र के लेखक रोमाशा को माना जाता है, महिलाएं पति के साथ यज्ञ में भाग लेती थी जैसे यज्ञ बाल्य की पत्नी मैत्री उपनिषद काल में परम विद्वान थी। विद्वान महिलाएं दो तरह की होती थी ब्रह्मवादिनी जो जीवन भर वेदों का ज्ञान प्राप्त करती थी दूसरी वह साधोवाह शादी से पहले तक ब्रह्मचर्य का पालन करती थी।

सामाजिक स्थिति –

वैदिक काल में पर्दा प्रथा का चलन नहीं था, धार्मिक कार्यों में पत्नी का होना आवश्यक था, मोक्ष की दृष्टि से पुत्र का होना आवश्यक था। **कुछ ऐसे अनुष्ठान थे जिन्हें केवल महिलाएं कर सकती थी उनमें से सीता यज्ञ एक है जिसे अच्छी फसल होने के लिए किया जाता था।**

विवाह संस्कार एक पवित्र संस्कार माना जाता था और सामाजिक और धार्मिक कर्तव्य भी माना जाता था। स्वयंवर प्रथा लोकप्रिय थी। जब तक बेटी व बेटे वयस्क ना हो जाए शादी निषेध थी।

निष्कर्ष –

ज्ञान के क्षेत्र में वैदिक काल का शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। हर क्षेत्र में गतिशील स्थिति थी, समाज की स्थिति संतोषजनक थी सामाजिक राजनीतिक जीवन में महत्वपूर्ण स्वतंत्रता थी। जितने अधिकार साहित्य क्षेत्र में महिलाओं को दिए गए उतने तत्कालीन आज की दुनिया में नहीं है। **वैदिक काल समाज प्रगतिशील आशावादी समाज था। पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार थे प्रगतिशील शिक्षा प्रणाली वैदिक काल के विकास के लिए जिम्मेदार थी।**

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (मध्य प्रदेश)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

अकेले हो तो
विचारों पर काबू रखो
और
सबके साथ हो तो
जुबान पर काबू रखो।

पछतावा अतीत नहीं बदल सकता
और चिंता भविष्य नहीं सँवार सकती
इसलिए वर्तमान का आनंद लेना ही
जीवन का सच्चा सुख है।

जीवन में समय चाहे
जैसा भी हो
परिवार के साथ रहो,
सुख हो तो बढ़ जाता है
और
दुःख हो तो बँट जाता है।

कृत्रिम सुख की बजाय
ठोस उपलब्धियों के
पीछे समर्पित रहे।

- अब्दुल कलाम सर

इतना बेहतर भी मत
खोजो कि बेहतरीन को
ही खो दो।

मंजिल के लिए जहाँ तक
रास्ता दिख रहा है,
वहाँ तक चलिए, आगे का
रास्ता
वहाँ पहुँचने के बाद दिखने
लगेगा।

मेरे पिताजी की साइकिल

मैं उस समय की बात कर रहा हूँ, जब शहर में आवागमन के लिये साइकिल का प्रचलन था। दुपहिया वाहन भी इक्के दुक्के ही थे जबकि चार पहिया वाहन तो ना के बराबर थे। उस समय समाज में आपसी प्रेम भाईचारा खूब था और ईमानदारी व सादगी से लोग जीवन यापन करते थे। फिर भी मेरे पिताजी ने कभी साइकिल खरीदी ही नहीं, इसलिए साइकिल चलाने वाला प्रश्न ही बेईमानी हो जाता है। अब यह जिज्ञासा अवश्य ही होगी कि ऐसा क्यों? तो उस पर नीचे विस्तार से बता दे रहा हूँ -

आज से 60/65 साल पहले एक घटनाक्रम में पिताजी के किसी परिचित द्वारा साईकल न वापरने पर जब पूछा, तब उन्होंने बताया कि मेरी ये दो टाँगें ही साइकिल वाले दो पहिये हैं। उसी बातचीत में उन्होंने अपने मित्र को बताया कि मैं तीन तल्ले पर रहता हूँ और मेरी तरह यहाँ अनेक लोग रहते हैं और सभी की साइकिल नीचे एक के बाद एक सटी खड़ीं रखनी पड़ती है और इनको रखने व निकालते वक्त आपसी हल्की खींचातानी न चाहते हुए भी हो ही जाती है इसलिये मैं भला और मेरी ये दोनों टाँगें। उसके कुछ सालों बाद जब मैंने नौकरी पर जाना प्रारम्भ कर दिया तब इस विषय पर मेरे द्वारा पूछने पर उन्होंने मुझे समझाया कि यदि तुम दोनों टाँगों को साइकिल के दो पहिये मान इनके भरोसे रहोगे तो बहुत ही ज्यादा सुखी रहोगे। फिर उन्होंने मुझे निम्न बातें समझाई -

1) आफिस जाओ तब रोज नये रास्ते से जाना आना करो और उसके जो कारण बताये वो इस प्रकार हैं -

अ) शहर का पूरा भूगोल तुम्हें आसानी से याद भी हो जायेगा और समझ में भी आ जायेगा।
ब) आवश्यकता पड़ने पर तुम कम दूरी वाला रास्ता काम में ले पाओगे।
स) पैदल चलने पर रास्ते में पड़ने वाले हर मन्दिर का बाहर से अपने आप दर्शन हो जायेगा।
द) किस रास्ते पर किस वस्तु का बाजार बसा है, ध्यान में रहेगा।
ल) कहाँ पर कौन सी वस्तु अच्छी व उचित दाम में मिल सकती है उसका हमेशा ध्यान करते रहो ताकि किफायती में गुणवत्ता वाला सामान वापर सको।

2) पैदल चलते रहने से मोटापा पनपेगा ही नहीं।

3) पैदल चलने वाले को डायबिटीज होती नहीं।

4) पैदल चलने से टाँगे मजबूत होती हैं।

5) पैदल चलने पर किसी के भरोसे नहीं रहेंगे यानी यदि साइकिल में किसी भी प्रकार की खराबी हुई तो साइकिल सवार को जरा भी पैदल चलना अखरता है।

6) पैदल चलने पर शुद्ध हवा फेफड़ों में जाती है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उपयोगी होती है।

7) एक साथ सारा सामान लाने का झंझट नहीं रहेगा यानी रोज ऑफिस से लौटते समय आवश्यकता क्रमानुसार उतना ही सामान अपने थैले में डलवाओ जितना आसानी से घर तक ला पाओ। भले ही थोक भाव में सौदा कर बाकी सामान दुकानदार के पास ही रहने दो।

8) अति आवश्यकता हो तो झाका (एक टोकरी लिये मजदूर बाजारों में उपलब्ध रहते हैं) कर उससे सामान घर भिजवा दो।

9) नित्य खरीदारी होने से ताजी सब्जी, फल व फूल घर ला पाओगे।

10) भूख भी अच्छी लगेगी जिससे भोजन समय पर कर पायेंगे जो स्वास्थ्य की दृष्टि से उचित माना जाता है ।

11) पैदल चलने से थकावट आना वाजिब है जिसके फलस्वरूप रात को आरामदायक गहरी नींद आयेगी।

उपरोक्त को ही पिताश्री की आज्ञा मान आज तक मैं दो टाँगों को ही साइकिल के पहियें मान आराम की जिन्दगी जी रहा हूँ हाँलाकि अब तो घर में साइकिल के अलावा दुपहिया वाहन में मोटरसाइकिल व चार पहिया वाहन के तौर पर मोटरगाड़ी भी है। लेकिन मैं आज भी केवल उसमें बैठना ही जानता हूँ। चलाना सीखने की कभी ईच्छा ही नहीं हुई।

यह सर्वविदित है कि आज भी अनेकों ऐसे हैं जिनके पास साइकिल नहीं है और यह सब इस बार कोरोना काल में सभी को परिलक्षित जब हुआ तब लोगों का झुण्ड सड़कों पर 2000/3000 कि.मी. तक का सफर अपने दो टाँगों के भरोसे पूरा किया। इस कारण ही बरबस याद आ जाती है निम्न दो पंक्तियाँ -

न बसें काम आयी, न रेलें काम आयी।
बुरे वक्त में साहिब, ये दो टांगे ही काम आयी।।

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू', बीकानेर (राज.)

पारंपरिक व्यंजन–दही पकौडी चाट

सामग्री – राजगिरा का आटा एक कप, मूंगफली का चुरा पाव कप, नमक स्वाद अनुसार, मोयन के लिए घी 2 टीस्पून, सोडा चुटकी भर, ताजा गाढ़ा दही 2 कप, चीनी 2 टेबलस्पून, नमक - लाल मिर्ची - जीरा पाउडर स्वादानुसार, तलने के लिए घी ।

विधि – राजगीर का आटा, मूंगफली का चुरा, नमक, मोयन और सोडा मिलाकर पानी से उसका गाढ़ा पेस्ट बना ले। तले हुए बड़े पानी में डालकर 2 मिनट रखें। फिर पानी से निकालकर हथेलियों से हल्के हाथ से दबा कर उसका पानी निकाले। दही को थोड़ा पानी निथार ले फिर दही को घोटकर उसमें चीनी मिला लें। एक प्लेट में बड़े रखकर उस पर दही डालें। ऊपर से नमक, लाल मिर्ची, जीरा पाउडर छिड़के। हरा धनिया अनार के दाने और कटे हुए अंगूर के साथ सजा कर पेश करें। इसे व्रत में भी बना सकते है।

रसोई युक्तियाँ –

1. ढोकले में गुनगुने पानी का ही प्रयोग करें। इससे ढोकला स्पंजी बनता है।
2. करेलों का कड़वापन दूर करने के लिए उन्हें खुरच कर सिरके में नमक व हल्दी का बना घोल लगा दें। 1 घंटे बाद अच्छी तरह धो लें, कड़वापन दूर हो जाएगा।
3. धनिया पुदीने की चटनी बनाते समय उस में पानी की जगह बर्फ के टुकड़े डाल कर पीसें, चटनी कई दिनों तक हरी बनी रहेगी।
4. फूले-फूले स्वादिष्ठ पौपकौर्न बनाने के लिए उन्हें बनाने से थोड़ी देर पहले फ्रीजर में रख दें। फिर बनाएं तो अच्छे फूलेगे।

घरेलू नुस्खे –

1. दर्द और कांटा चूभे जगह साफ छनी हुई मिट्टी गिली करके बांधने से दर्द दूर होता है।
2. शरीर का कोई भी भाग जल जाए तो उस जगह तील पीसकर लगाएं।
3. दातों का दर्द कम करने के लिए फिटकरी के पानी से कुल्ले करें।
4. सेंधा नमक, हल्दी और सरसों का तेल मिलाकर रोजाना दातों और मसुडो पर लगाने से मसूड़े मजबूत होते हैं।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

आम, नीम, पीपल, बरगद
जैसे बड़े पेड काटकर घर में.
मनी प्लांट लगाने वाली
मानव जाति को
'भीषण गर्मी
की शुभकामनाए।

दाल के डिब्बे में, अलमारी में
कपड़ों की घड़ी के बीच पुराने
सूटकेस में, पलंग पेटी के अंदर,
दराज के कागज के नीचे, आये
गए लिफाफे में, पुराने पर्स में,
सब जगह ढूंढ लेना. फिर मत
कहना कि मेरे 2000/- के
नोट बदलने से रह गए

सावधान सावधान
सभी मायके/ससुराल
जाने वाले लोग
जल्दी से अवसर का लाभ
उठाये
500 के स्थान पर 2000
दिया जायेगा
जल्दी करें ऑफर छूट
ना जाये।

गंगा में वही पाप धुलते
है जो गलती से हो जाये।

योजना बनाकर किये
गए पाप यमराज के
लठ्ठ से ही धुलते है।

लड़के ने दहेज में मांगा
आईफोन

लड़के की सासू जी बोलीं
खुद की कार में बैठकर
आना तब मिलेगा

पत्नी : मेरे बाल सफेद होते
जा रहे हैं।
व्हॉट शुड आई डू?

पति : यू शुड डाई

लघुकथा- अंकुरित विश्वास

घर-आंगन में रेहान ने नयी विज्ञान की रंग-बिरंगी पुस्तक अपने जन्मोत्सव पर अपनी नानी अम्मा से पाकर काफी खुश था। वह उस पुस्तक को पढ़कर और देखकर अपने कमरे में साज सज्जा करते हुए आशियाने को बनाते रहता था। उसे अपने इस काम में बहुत मज़ा आता था। अपने कमरे में रखें हुए खिलौने और पुस्तकों को वह किसी को छूने नहीं देता था। इस पर वह अपनी अम्मा सुमित्रा की भी बात नहीं मानता था।

चूंकि घर में अकेला और एकलौता बेटा था, लाड़ प्यार में वह काफी जिद्दी स्वभाव का हो गया था।
रेहान की इस हरकत से उसकी अम्मा सुमित्रा काफ़ी परेशान और दुखी रहतीं थीं। इतना होने पर भी सुमित्रा अपने बेटे को नाराज व दुखी नहीं होने देना चाहती थी। उसकी हरकतों को नजरअंदाज करते रहतीं थीं।

वह कोई ऐसा काम नहीं करना चाहतीं थीं जिससे रेहान के मन में अपनी अम्मा के विरुद्ध कोई ग़लत भावना पैदा हो सकें। फिर एक दिन सुमित्रा को रेहान को टाइफाइड का इंजेक्शन दिलाने डॉक्टर शैवाल के यहाँ जाना था। निर्धारित तिथि और समय पर नहीं जाने पर लम्बी कतार में फंसना था।
सुमित्रा चाहतीं थीं कि जल्दी जाकर आ जाएं।
फिर स्कूल के समय रेहान को तैयार कर स्कूल भेजने की भी जिम्मेदारी उसी पर थी।
वह अपने खिलौने और पुस्तकों से बनाएं हुए घर को सुरक्षित देखना चाहता था।
उसे डर लगता था कि अम्मा के डर से काम वाली महरी मालती उसके कमरे को साफ-सुथरा करने के बहाने मेरे द्वारा बनाए गए खिलौने के घर को नहीं तोड़ दें।
इसलिए वह इंजेक्शन लगाने के लिए नहीं जाना चाहता था।
परन्तु माँ की ममता तो सब जानते हैं कि किसी भी तरह येन केन प्रकारेण वह बच्चे को इंजेक्शन दिला दें ताकि भविष्य में वह सुरक्षित रह सके।

सुमित्रा इस कारण अपने बेटे के मन में अंकुरित विश्वास को जीवित रखना चाहतीं थीं।
उसने चुपके से रेहान के कमरे में उसके द्वारा बनाए गए खिलौने के घर की मोबाइल पर तस्वीर खींच कर महरी मालती के एंड्रॉयड फोन पर भेज दी।

फिर उसे किचन में बुलाकर सारी बातें समझा दी।
सुमित्रा तैयार हो रेहान को इंजेक्शन दिलाने लें गयी। रेहान को अपनी अम्मा और बाबूजी पर पूरा विश्वास था कि अब मेरे द्वारा बनाए गए खिलौने के घर बिल्कुल सुरक्षित रहेगीं।
सही समय पर सुमित्रा के पहुँचने पर इंजेक्शन दिलाने में कोई तकलीफ़ नहीं हुई।
उसके बाद सुमित्रा ने अपने लाडले को आइसक्रीम खिलाते हुए घर लें आई।
इस बीच महरी मालती ने अपने मोबाइल पर आयी तस्वीर को देखकर रेहान के

कमरे की साफ-सफाई की और मोबाइल पर भेजी गई तस्वीर के अनुरूप उसके कमरे को सजा दी।
इंजेक्शन लगाने के बाद ख़ुशी-ख़ुशी वह अपने कमरे में घुस कर अपने खिलौना घर को देखा कि वह सुरक्षित है अथवा नहीं।
उसे डर था कि महरी मालती सब कुछ गड़बड़ कर सकती हैं।
सुमित्रा ने रेहान को इस कदर ख़ुश बहुत कम ही अवसरों पर देखा थीं।

उसे आज अपने बेटे के ऊपर काफी फक्र हो रहा था कि उसके मन में अपनी अम्मा के प्रति कितना विश्वास और भरोसा है।
वह इस अंकुरित विश्वास को जीवित रखना चाहतीं थीं।
आज सुमित्रा ने अपने चातुर्य से यह खेल विजेता बन कर पूरी कर चुकीं थीं।

बच्चों के कोमल हृदय में अंकुरित विश्वास को सदैव बनाकर रखना जरूरी है।
सुमित्रा आज इस बात को समझ कर काफी खुश नजर आ रही थी।

- डॉ0 अशोक शर्मा जी, पटना (बिहार)

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

अरे नमन! तुम यहां स्टेशन पर क्या कर रहे हो भाई?
शानु तुम..... यहाँ कैसे मेरे दोस्त और कहां जा रहे हो ....? तुम तो बिल्कुल भी नहीं बदले जहाँ तक मुझे याद है तुम्हारे पापा का तबादला हुआ तब हम सातवीं कक्षा में थे बराबर? हां दोस्त, मैं पी जी की तैयारी कर रहा था परीक्षा के लिए यह सेंटर मिला इसी सिलसिले में आना हुआ था। अब तुम बताओ तुम कहां जा रहे हो...? जा रहा हूँ मायानगरी में अपनी किस्मत आजमाने....

मतलब मैं कुछ समझा नहीं नमन सीधे सीधे बोलो न यार क्या हुआ, अभी ट्रेन आने में एक घण्टे का समय है चलो तब तक कॉफी पीते हैं और वहीं इत्मीनान से बैठ बातें भी करते है।

अब तुम बताओ मुंबई आखिर किस मकसद से जा रहे हो, तुमने पढ़ाई क्या की। शानु कॉलेज के पांच साल यार मौज-मस्ती में कैसे उड़ गए पता ही नहीं चला। कोई अच्छी डिग्री तो हासिल नहीं कर पाया जिसका बहुत अफसोस है। तुमने आगे क्या किया शानु... मेरे पापा का सपना था मैं डॉक्टर बनू तो मैं मेडिकल में गया गवर्मेंट कॉलेज से एम.बी.बी.एस करने के बाद मुंबई के कॉलेज में इंटर्नशिप कर रहा हूँ।

तुमने मुंबई जाकर क्या करने का सोचा है नमन....?
फिलहाल तो कुछ सोचा नहीं। पापा चाहते थे मैं इंजीनियरिंग करूं और किसी अच्छी जॉब पर लग जाऊं।
तो इसमें ग़लत क्या है मेरे भाई। अरे यार वह मैं नहीं कर पाया तो अब पापा सुबह से चालू हो जाते हैं वो चाहते हैं उनके बिजनेस में हाथ बटाओ....इन छोटे-मोटे कामों में मेरी दिलचस्पी नहीं है शानु.....।

अच्छा ठीक है चलो मुंबई में तुम कुछ दिनों के लिए मेरे फ्लैट पर रह सकते हो। थैंक्स यार तुमने एक चिंता तो दूर कर दी।
मुंबई पहुंचकर..... अरे नमन मैं निकलता हूँ मेरी ड्यूटी का समय हो चुका है मिलते हैं रात में। अरे इतने सुबह-सुबह तुम तैयार भी हो गए शानु!
हाँ भाई मायानगरी है, यह चलो बाय पांच मिनट भी देर हो जाए तो लोकल निकल जाएगी। ठीक है तुम निकलो मैं भी उठता हूँ। दो-चार माह तो जॉब ही करनी पड़ेगी।

रात में शानु आते ही कहीं कोई जॉब की बात हुई नमन...? दो-तीन जगह गया था यार पर ऐसे काम क्या बताऊं और सैलरी भी पंद्रह बीस हजार से ऊपर नहीं दो-तीन दिन यूं ही चक्कर काटने में निकल गए, अपना स्टार्टअप करूं तो फंड नहीं कुछ दिमाग काम नहीं कर रहा है। बुरा मत मानना नमन पर तुम क्या सोचते हो फंड के रहने भर से स्टार्ट अप सक्सेस हो जाएगा.... उसके लिए भी बहुत नॉलेज चाहिए अच्छे-अच्छे पढ़ें लिखे भी फेल हो रहे है। उस समय तुम पढ़ाई-लिखाई पर फोकस करते तो कम

से कम आज परेशान तो नहीं होना पड़ता। तुम सही कह रहे शानु तब दोस्तों और पार्टियों से ही फुरसत नहीं मिलती थी। मम्मी- पापा बहुत समझाते भी थे पर मैं तो उनकी बात जैसे हवा में उड़ा देता, बहुत विश्वास के साथ यहाँ आया था पर दूर-दूर तक कोई आशा की किरण नजर नहीं आ रही।

नमन पापा के साथ बिजनेस जाना शुरू तो करो उसमें ही तुम और आगे बढ़ सकते रातों-रात तो सफलता किसी को भी नहीं मिलती थोड़ा पेंशस तो रखना ही पड़ता है। हाँ तुम सही कह रहे पर अब घर लौट कर जाऊं कैसे मैं तो कहकर निकला था बहुत बड़ा आदमी बनने के बाद ही घर की दहलीज पर कदम रखूंगा, यहां आने पर समझ आया ख्वाब और हकीकत में जमीन आसमान का अंतर है....
तभी दरवाजे की बेल बज उठी सामने पापा को देखकर नमन की आंखें डबडबा गई पापा ने उसे गले लगाते हुए कहा बेटा अपने घर चलो। मैं तुम्हें आने ही न देता पर यहां आकर तुमने जो पाठ पढ़ा वह तुम्हें हमेशा याद रहेगा और मेहनत करने के लिए प्रेरित करेगा।अब हम अपने बिजनेस को ही विस्तार देंगे। नमन को खुशी-खुशी पापा के साथ रवाना होते देख शानु मुस्कुराने लगा।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

उत्कल प्रदेश के प्रधान देवता श्री जगन्नाथ जी की रथयात्रा आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया को जगन्नाथपुरी में आरम्भ होती है और शुक्ल पक्ष की एकादशी को रथयात्रा का समापन होता है। **पुरी पूर्वी भारत के उड़ीसा (ओडिशा) प्रान्त में है जिसे पुरुषोत्तम पुरी, शंख क्षेत्र, श्रीक्षेत्र, शाक क्षेत्र, नीलांचल, नीलगिरि के नाम से भी जाना जाता है।** जो प्रभु श्री जगन्नाथ जी की मुख्य लीला-भूमि है। श्री जगन्नाथ जी पूर्ण परात्पर भगवान है और श्रीकृष्ण उनकी कला का ही एक रूप माने जाते है, इसलिए पुरी स्थित जगन्नाथ जी का मंदिर भगवान विष्णु के कृष्ण अवतार को समर्पित है। वैष्णव धर्म के अनुसार श्री जगन्नाथ जी राधा रानी और श्रीकृष्ण की युगल मूर्ति के प्रतीक है। रथयात्रा में भगवान विष्णु के दशावतारों की पूजा होती है।

शास्त्रों के अनुसार रथ यात्रा की शुरुआत बहन सुभद्रा के द्वारिका नगर भ्रमण की इच्छा पूर्ण करने के उद्देश्य से हुई थी। तब बहन सुभद्रा, श्री कृष्ण व बलराम तीनो अलग-अलग रथों में बैठकर अपनी मौसी के घर जनकपुर गए थे तब से आज तक प्रति वर्ष भगवान जगन्नाथ अपने बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा के साथ हर साल अपनी मौसी के घर जाते हैं। आज भी तीनों की मूर्तियों को पुरी के जगन्नाथ मंदिर से रथ पर सवार करके उनकी मौसी के घर यानी गुंडीचा मंदिर ले जाया जाता है।

रथ की विशेषता -

- कहा जाता है कि भगवान जगन्नाथ जी की रथयात्रा का पुण्य सौ यज्ञों के समान होता है। रथयात्रा एक ऐसा पर्व है जिसमें भगवान जगन्नाथ अपने भक्तों के बीच आते हैं और उनके दु:ख-सुख में सहभागी होते हैं।

- भगवान जगन्नाथ रथयात्रा के लिए हर साल 3 रथ बनाए जाते हैं, जिनकी तैयारी बसंतपंचमी से शुरू हो जाती है। **तीनों रथ नारियल और नीम की पवित्र एवं परिपक्व काष्ठ (लकड़ियों) से तैयार किये जाते हैं, जिसे 'दारु' कहते हैं।** रथ बनाने में सिर्फ लकड़ियाँ ही इस्तेमाल की जाती हैं, कोई धातु जैसे कील (लोहा) आदि नहीं लगाई जाती है। रथ बनाने वाले सेवक को **"गरबाड़ू"** कहा जाता है।

- तीनों रथों में पहिये से लेकर शिखर के ध्वजदंड तक 34 अलग - अलग हिस्से होते हैं। रथों के निर्माण में तक़रीबन हजारों क्यूबिक फीट लकड़ियों का इस्तेमाल होता है। यह लकड़ी नयागढ़, खुर्दा, बौध इलाके के वनों से हजारों पेड़ों को काटकर लायी जाती है। इसके लिए इससे दोगुने पौधे भी लगाए जाते हैं।

- जब तीनों रथ तैयार हो जाते हैं, तब **"छर पहनरा"** नामक एक अनुष्ठान किया जाता है। जिसमे पुरी के गजपति राजा पालकी में यहाँ आते हैं और इन तीनों रथों की

विधिवत पूजा करते हैं। **"सोने की झाड़ू"** से रथ मण्डप और रास्ते को साफ़ करते हैं।

- रथयात्रा में भगवान जगन्नाथ, उनके बड़े भाई बलराम और छोटी बहन सुभद्रा तीनों अलग-अलग रथों पर सवार होते हैं। जिसमे सबसे **आगे बलराम का रथ "ताल ध्वज" जिसका रंग लाल और हरा होता है, फिर बहन सुभद्रा का रथ "दर्पदलन" या "पद्म ध्वज" जो काले या नीले और लाल रंग का होता है और सबसे पीछे भगवान जगन्नाथ का रथ "नन्दीघोष" या "गरुड़ध्वज" चलता है। जिसका रंग लाल और पीला होता है। रथों को उनके रंग और ऊँचाई से आसानी से पहचाना जा सकता है।**

- **भगवान जगन्नाथ का नन्दीघोष रथ तकरीबन 45.6 से 65 फीट ऊंचा और चौड़ा होता है, जिसमें 7 फीट व्यास के 18 पहिये होते है, बलराम का तालध्वज रथ और देवी सुभद्रा का दर्पदलन रथ नन्दी घोष से छोटा होता है, जिसमे 16 और 14 पहिये लगे होते है।**

- आषाढ़ माह की शुक्लपक्ष की द्वितीया तिथि को रथयात्रा आरम्भ होती है। ढोल, नगाड़ों, तुरही, शंखध्वनि और जयनाद के बीच भक्तगण इन रथों को रस्सी से खींचते हैं। माना जाता हैं कि रथ खींचने वाले महाभाग्यवान होते है और जीवन मरण के चक्र से मुक्ति मिल जाती एवं उनको मोक्ष की प्राप्ति होती है।

- भगवान जगन्नाथ के लिए **पूरी के जगन्नाथ मंदिर में 752 चूल्हों पर प्रसाद बनाया जाता है।** इसलिए यह दुनिया की सबसे बड़ी रसोई का रूप है। रथयात्रा के नौ दिनो तक के उत्सव में यहाँ के चूल्हे जलाये नही जाते हैं तब सारा भोग गुंडिचा मंदिर में बनाया जाता है। वहाँ भी पुरी मंदिर के समान 752 चूल्हों की ही रसोई है।

- भगवान जगन्नाथपुरी का यह लोकप्रिय रथयात्रा उत्सव जगन्नाथपुरी के अलावा भारत के कुछ प्रांतो जैसे- गुजरात, असम, जम्मू, दिल्ली, आंध्रप्रदेश, अमृतसर, भोपाल, बनारस और लखनऊ में भी मनाया जाने लगा है। इसके अलावा बांग्लादेश, सैन फ्रांसिस्को और लंदन आदि देशों में भी रथयात्रा निकाली जाने लगी है।

देवशयनी एकादशी

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को **"देवशयनी हरिशयनी या पद्मा एकादशी"** कहा जाता है। हिंदू मान्यता के अनुसार 4 महीनों के लिए भगवान श्री विष्णु निद्रा में रहते हैं जिसे **हरिशयन काल** कहते हैं। इन 4 महीनों में विवाह आदि जैसे कोई भी शुभ कार्य नहीं किए जाते है।

पूरा पढ़े - www.

योग दिवस
की बधाई

"रोजाना योग से रोग मुक्त रहता है शरीर
मानिसक शांति मिलती है असीम,
रहते है ऊर्जावान रात और दिन
स्वस्थ जीवन की कुंजी है योग"